ॐ

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स चउत्थे वेयणाए

वेयणाभावविहाणाणुयोगद्दारं

वेयणाभावविहाणे त्ति तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ।।१।।

अब वेदनाभावविधान प्रारम्भ होता है। उसमें ये तीन अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं।।१।।

तत्थ भावो चउव्विहो -- णामभावो ठवणभावो दव्वभावो भावभावो चेदि। तत्थ भावसद्दो णामभावो णाम। सब्भावासब्भावसरूवेण सो एसो त्ति अभेदेण संकप्पिदत्थो ट्ठवणभावो णाम। दव्वभावो दुविहो-- आगमदव्वभावो णोआगमदव्वभावो चेदि। तत्थ भावपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वभावो णाम। णोआगमदव्वभावो तिविहो-- जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तणोआगमदव्वभावभेएण (* ता प्रतौ 'णोआगमदव्वभेएण' इति पाठः।)। जाणुगसरीर-भवियं गदं। तव्वदिरित्तदव्वभावो दुविहो -- कम्मदव्वभावो णोकम्मदव्वभावो चेदि। तत्थ कम्मदव्वभावो णाणावरणादिदव्वकम्माणं अण्णाणादिसमुप्पायणसत्ती। णोकम्मदव्वभावो दुविहो -- सचित्तदव्वभावो अचित्तदव्वभावो चेदि। तत्थ केवलणाण-दंसणादियो सचित्तदव्वभावो। अचित्तदव्वभावो दुविहो -- मुत्तदव्वभावो अमुत्तदव्वभावो चेदि। तत्थ वण्ण-गंध-रस-फासादियो मुत्तदव्वभावो। अवगाहणादियो अमुत्तदव्वभावो। भावभावो दुविहो -- आगम-णोआगमभावभेदेण (*

आ ता प्रत्योः 'णोआगमभावभेएण' इति पाठः।) । तत्थ भावपाहुडजाणगो उवजुत्तो आगमभावभावो। (णोआगमभावभावो) दुविहो-- तिव्व-मंदभावो णिज्जराभावो चेदि। तिव्व-मंददाए भावसरूवाए (* अ आ प्रत्योः 'भावपरूवाए', ता प्रतौ 'भावपरूवणाए' इति पाठः।) कधं भावभाववएसो? ण, तिव्व-तिव्वयर-तिव्वतम-मंद-मंदयर-मंदतमादिगुणेहि भावस्स वि भावुवलंभादो। ण णिज्जराए भावभावत्तमसिद्धं, सम्मत्तुप्पत्तियादिभावभावेहि जणिदणिज्जराए उवयारेण तदविरोहादो। एत्थ कम्मभावेण पयदं, अण्णेसिं वेयणाए संबंधाभावादो। वेयणाए भावो वेयणाभावो, वेयणाभावस्स विहाणं परूवणं वेयणाभावविहाणं। तम्हि वेयणाभावविहाणे इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति। अट्ठ अणुयोगद्दाराणि किण्ण परूविदाणि। ण, सेसपंचण्णमणुयोगद्दाराणमेत्थेव पवेसादो।

भाव चार प्रकारका है -- नामभाव, स्थापनाभाव, द्रव्यभाव और भावभाव। उनमें भाव यह शब्द नामभाव है। सद्‌भाव या असद्‌भाव स्वरूपसे 'वह यह है' इस प्रकार अभेदसे संकल्पित पदार्थ स्थापनाभाव कहा जाता है। द्रव्यभाव दो प्रकारका है -- आगमद्रव्यभाव और नोआगमद्रव्यभाव। उनमें भावप्राभृतका जानकार उपयोगरहित जीव आगमद्रव्यभाव कहलाता है। नोआगमद्रव्यभाव ज्ञायकशरीर, भावी और तद्‌व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यभावके भेदसे तीन प्रकारका है। इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यभाव ज्ञात हैं। तद्‌व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यभाव दो प्रकारका है -- कर्मद्रव्यभाव और नोकर्मद्रव्यभाव। उनमें ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्मोंकी जो अज्ञानादिको उत्पन्न करनेरूप शक्ति है वह कर्मद्रव्यभाव कही जाती है। नोकर्मद्रव्यभाव दो प्रकारका है -- सचित्तद्रव्यभाव और अचित्तद्रव्यभाव। उनमें केवलज्ञान व केवलदर्शन आदि सचित्तद्रव्यभाव हैं। अचित्तद्रव्यभाव दो प्रकारका है -- मूर्त द्रव्यभाव और अमूर्त द्रव्यभाव। उनमें वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्श आदिक मूर्त द्रव्यभाव हैं। अवगाहनादिक अमूर्त द्रव्यभाव हैं।

भावभाव दो प्रकारका है -- आगमभावभाव और नोआगमभावभाव। इनमें भावप्राभृतका जानकार उपयोगयुक्त जीव आगमभाव कहा जाता है। (नोआगमभाव) दो प्रकारका है -- तीव्र-मन्दभाव और निर्जराभाव।

शंका -- जबकि तीव्रता और मन्दता भावस्वरूप हैं तब उन्हें भावभाव नामसे कहना कैसे उचित कहा जा सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, मन्द, मन्दतर और मन्दतम आदि गुणोंके द्वारा भावका भी भाव पाया जाता है।

निर्जराको भी भावस्वरूपता असिद्ध नहीं है, क्योंकि, सम्यक्त्वोत्पत्ति आदिक भावभावोंसे उत्पन्न होनेवाली निर्जराके उपचारसे भावभाव स्वरूप होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

यहाँ कर्मभाव प्रकृत है, क्योंकि, कर्मभावको छोड़कर और दूसरोंकी वेदनाका यहाँ सम्बन्ध नहीं है। वेदनाका भाव वेदनाभाव, वेदनाभावका विधान अर्थात् प्ररूपणा वेदनाभावविधान है।

उस वेदनाभावविधानमें ये तीन अनुयोगद्वार जाननेयोग्य हैं।

शंका -- यहाँ आठ अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गयी है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, शेष पाँच अनुयोगद्वार इन्हींमें प्रविष्ट हैं।

संपहि वेयणाभावविहाणं किमट्ठमागयं? वेयणादव्वविहाणे जहण्णुक्कस्सादिभेदेण अवगददव्वपमाणाणं, खेत्तविहाणे वि जहण्णुक्कस्सादिभेदेण अवगदओगाहणपमाणाणं, कालविहाणे जहण्णुक्कस्सादिभेदेण अवगयकालपमाणाणमट्ठण्णं कम्माणमण्णाणादि कज्जुप्पायणसत्तिवियप्पदपदुप्पायणमागयं।

शंका -- अभी वेदनाभावविधानका अवतार किसलिए हुआ है?

समाधान -- वेदनाद्रव्यविधानमें जघन्य व उत्कृष्ट आदिके भेदसे जिन आठ कर्मोंके द्रव्यप्रमाणको जान लिया है, क्षेत्रविधानमें भी जघन्य व उत्कृष्ट आदिके भेदोंसे जिनका अवगाहनाप्रमाण जाना जा चुका है, तथा कालविधानमें जिनका जघन्य व उत्कृष्ट आदिके भेदोंसे कालप्रमाण ज्ञात हो चुका है, उन आठ कर्मोंकी अज्ञानादि कार्योंकी उत्पादक शक्तिके विकल्पोंकी प्ररूपणा करनेके लिए वेदनाभावविधानका अवतार हुआ है।

तिण्णमणुयोगद्दाराणं णामणिद्देसट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

अब उक्त तीन अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश करनेके लिए आगेका सूत्र कहा जाता है --

पदमीमांसा सामित्तमप्पाबहुए त्ति।।२।।

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व।।२।।

पदमिदि वुत्ते जहण्णुक्कस्सादिपदाणं गहणं। कुदो? अण्णेहि पदेहिं एत्थ पओजणाभावादो। तेण अत्थ-ववत्थापदाणं गहणं ण होदि, भेदपदस्सेव एत्थ गहणं कीरदे। पदाणं

मीमांसा परिक्खा गवेसणा पदमीमांसा। एसो पढमो अहियारो। हय-हत्थि-सामित्तादिभेदेण जदि वि सामित्तं बहुप्पयारं तो वि एत्थ कम्मभावसामित्तं चेव घेत्तव्वं, अण्णेहि अहियाराभावादो। एदं (* प्रतिषु 'एवं' इति पाठः।) बिदियमणियोगद्दारं। अप्पाबहुगं पि जदि वि दव्वादिभेदेण अणेयविहं (* अ प्रतौ 'अणेयविदं' इति पाठः।) तो वि एत्थ कम्मभावअप्पाबहुगस्सेव गहणं कायव्वं, अण्णेहि एत्थ पओजणाभावादो। एदं तदियमणियोगद्दारं। एवमेदेहि तीहि अणुयोगद्दारेहि भावपरूवणं कस्सामो।

सूत्रमें निर्दिष्ट पदसे जघन्य व उत्कृष्ट आदि पदोंका ग्रहण किया गया है, क्योंकि, अन्य पदोंका यहाँ कोई प्रयोजन नहीं है। इसलिए यहाँ अर्थपद व व्यवस्थापद आदिक पदोंका ग्रहण नहीं होता है, किन्तु भेदपदका ही ग्रहण किया जाता है। पदोंकी मीमांसा अर्थात् परीक्षा या गवेषणाका नाम पदमीमांसा है। यह प्रथम अधिकार है। घोड़ा व हाथी आदि सम्बन्धी स्वामित्वके भेदसे यद्यपि स्वामित्व बहुत प्रकारका है, तो भी यहाँ कर्मभावके स्वामित्वका ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, और दूसरोंका यहाँ अधिकार नहीं है। यह दूसरा अनुयोगद्वार है। अल्पबहुत्व भी यद्यपि द्रव्यादिके भेदसे अनेक प्रकारका है तो भी यहाँ कर्मभावके अल्पबहुत्वका ही ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि, दूसरे अल्पबहुत्वोंका यहाँ प्रयोजन नहीं है। यह तृतीय अनुयोगद्वार है। इस प्रकार तीन अनुयोगद्वारोंके द्वारा भावप्ररूपणा करते हैं।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा भावदो किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा? ।।३।।

पदमीमांसामें ज्ञानावरणीयवेदना भावकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है?।।३।।

एदं देसामासियसुत्तं, तेण अण्णेसिं णवण्णं पदाणं सूचयं होदि। तेण सव्वपदसमासो तेरस होदि। तं जहा -- किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किं णोमणोविसिट्ठा णाणावरणीयवेयणा त्ति। पुणो एत्थ एक्केक्कं पदमस्सिदूण बारहभंगप्पयाणि अण्णाणि तेरस पुच्छासुत्ताणि णिलीणाणि। ताणि वि एदेणेव सुत्तेण सूचिदाणि होंति। तदो चोद्दसण्णं पुच्छासुत्ताणं सव्वभंगसमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो त्ति बोद्धव्वो १६९। एत्थ पढमसुत्तस्स अट्ठपरूवणट्ठं देसामासियभावेण उत्तरसुत्तं भणदि --

यह देशामर्शक सूत्र है, अतएव यह अन्य नौ पदोंका सूचक है। इसलिए सब पदोंका योग (४+९) तेरह होता है। वह इस प्रकार है -- उक्त ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अनादि है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है और क्या नोमनोविशिष्ट है। फिर इस सूत्रमें एक-एक पदका आश्रय करके बारह भंगस्वरूप अन्य तेरह पृच्छासूत्र गर्भित है। वे भी इसी सूत्रसे सूचित हैं। इस कारण चौदह पृच्छासूत्रोंके सब भंगोंका जोड़ एक सौ उनहत्तर [१३+(१२X१३)= १६९] समझना चाहिए। यहाँ प्रथम सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करनेके लिए देशामर्शक रूपसे आगेका सूत्र कहते हैं --

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा।।४।।

उक्त ज्ञानावरणीय वेदना उत्कृष्ट भी होती है, अनुत्कृष्ट भी होती है, जघन्य भी होती है और अजघन्य भी होती है।।४।।

एत्थ णाणावरणीयसामण्णे णिरुद्धे ओजपदं णत्थि। कदो? फद्दएसु वग्गणासु अविभागपलिच्छेदेसु च कदजुम्मभावस्सेव उवलंभादो। कधमणादियपदस्स संभवो? ण, णाणावरणीयभावसामण्णे णिरुद्धे अणादियत्ताविरोहादो। ण च सादियपदस्स अभावो, विसेसे अप्पिदे तस्स वि उवलंभादो। ण च धुवत्ताभावो, सामण्णप्पणाए तदुवलंभादो। ण च अद्धुवत्तस्स अभावो, अणुभागविसेसप्पणाए विसिट्ठेगजीवप्पणाए च अद्धुवत्तदंसणादो। तदो पढमसुत्तं बारहभंगप्पयं त्ति दट्ठव्वं १२।

शंका -- यहाँ अनादि पदकी सम्भावना कैसे है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणीय भावसामान्यकी विवक्षा होनेपर उसके अनादि होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

सादि पदका भी यहाँ अभाव नहीं है, क्योंकि, विशेषकी विवक्षा करनेपर वह भी पाया जाता है। ध्रुव पदका भी अभाव नहीं है, क्योंकि, सामान्यकी मुख्यता होनेपर वह भी पाया जाता है। अध्रुव पदका भी अभाव नहीं है, क्योंकि, अनुभागविशेषकी अथवा विशिष्ट एक जीवकी विवक्षा करनेपर अध्रुवपना देखा जाता है। इस कारण प्रथम सूत्र बारह (१२) भंगस्वरूप है, ऐसा समझ ाना चाहिए।

पुणो बिदियपुच्छासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- उक्कस्सअणुभागवेयणा सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमसव्ववियप्पाणमजहण्णम्हि दंसणादो। सिया सादिया, अणुक्कस्साणुभागे ट्ठिदस्स उक्कस्साणुभागुप्पत्तीदो। उक्कस्सपदस्स अणादित्तं णत्थि, णाणाजीवप्पणाए वि उक्कस्सपदस्स अंतरदंसणादो। सिया अद्धुवा, उप्पण्णुक्कस्सपदस्स णियमेण विणासदंसणादो। उक्कस्सपदस्स धुवत्तं णत्थि, णाणाजीवप्पणाए वि उक्कस्सपदविणासदंसणादो। सिया जुम्मा, उक्कस्साणुभागफद्दयवग्गणाविभागपडिच्छेदेसु कदजुम्मसंखाए चेव उवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, एगवियप्पम्मि उक्कस्साणुभागे वड्ढिहाणीणमभावादो। एवमुक्कस्सपदं पंचवियप्पं ५।

अब द्वितीय पृच्छासूत्रका अर्थ कहा जाता है। वह इस प्रकार है -- उत्कृष्ट अनुभागवेदना कथंचित् अजघन्य है, क्योंकि, अजघन्य पदमें जघन्यसे आगेके सभी विकल्प देखे जाते हैं। कथंचित् सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट अनुभागमें स्थित जीवके उत्कृष्ट अनुभाग उत्पन्न होता है। उत्कृष्ट पदके अनादिता नहीं है, क्योंकि, नाना जीवोंकी विवक्षा होनेपर भी उत्कृष्ट पदका अन्तर देखा जाता है। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, उत्पन्न हुए उत्कृष्ट पदका नियमसे विनाश देखा जाता है। उत्कृष्ट पदके ध्रुवपना नहीं है, क्योंकि नाना जीवोंकी विवक्षा होनेपर भी उत्कृष्ट पदका विनाश देखा जाता है। कथंचित् युग्म है, क्योंकि, उत्कृष्ट अनुभागस्वरूप स्पर्धकों, वर्गणाओं और अविभागप्रतिच्छेदोंमें कृतयुग्म संख्या ही पायी जाती है। कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, एक विकल्पस्वरूप उत्कृष्ट अनुभागमें वृद्धि व हानिका अभाव है। इस प्रकार उत्कृष्ट पद पाँच (५) विकल्पस्वरूप है।

संपहि तदियपुच्छासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- णाणावरणीयअणुक्कस्सवेयणा (* अ प्रतौ 'वीयणा' इति पाठः।) सिया जहण्णा, उक्कस्सादो हेट्ठिमसव्ववियप्पेसु अणुक्कस्ससण्णिदेसु जहण्णस्स वि पवेसदंसणादो। सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमवियप्पेसु अजहण्णसण्णिदेसु अणुक्कस्सपदस्स वि पवेसदंसणादो। सिया सादिया, अणुक्कस्सपदविसेसं पडुच्च आदिभावदंसणादो। सिया अणादिया, अणुक्कस्ससामण्णप्पणाए आदिभावाणुवलंभादो। सिया धुवा, अणुक्कस्ससामण्णे अप्पिदे विणासाणुवलंभादो। सिया अद्धुवा, अणुक्कस्सपदविसेसे अप्पिदे (* ता प्रतिपाठोऽयम्। अ आ प्रत्योः 'सव्वमणुक्कस्स' इति पाठः।) सव्वअणुक्कस्सपदविसेसाणं विणासदंसणादो। सिया जुम्मा, सव्वअणुक्कस्सविसेसगयअणुभागफद्दय-वग्गण-

अविभागपडिच्छेदेसु कदजुम्मसंखाए उवलंभादो। सिया ओमा, कंडयघादेण अणुक्कस्सपदविसेसस्स हाणिदंसणादो। सिया विसिट्ठा, बंधेण अणुभागवड्ढिदंसणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसस्स वड्ढिहाणीणमणुवलंभादो। एवमणुक्कस्सपदं दसवियप्पं होदि १०।

अब तृतीय पृच्छासूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणीयकी अनुत्कृष्ट वेदना कथंचित् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्टसे नीचेके अनुत्कृष्ट संज्ञावाले सब विकल्पोंमें जघन्य पदका भी प्रवेश देखा जाता है। कथंचित् अजघन्य है, क्योंकि, जघन्यसे ऊपरके अजघन्य संज्ञावाले समस्त विकल्पोंमें अनुत्कृष्ट पदका भी समावेश देखा जाता है। कथंचित् सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पदविशेषकी अपेक्षा उसके सादिता देखी जाती है। कथंचित् अनादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट सामान्यकी विशेषता होनेपर विनाश नहीं देखा जाता है। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पदविशेषकी विवक्षा होनेपर सब अनुत्कृष्ट पदविशेषोंका विनाश देखा जाता है। कथंचित् युग्म है, क्योंकि, सब अनुत्कृष्ट विशेषोंमें रहनेवाले अनुभाग स्पर्धकों, वर्गणाओं और अविभागप्रतिच्छेदोंमें कृतयुग्म संज्ञा पायी जाती है। कथंचित् ओम है, क्योंकि, काण्डकघातसे, अनुत्कृष्ट पदविशेषकी हानि देखी जाती है। कथंचित् विशिष्ट है, क्योंकि, बन्धसे अनुभागकी वृद्धि देखी जाती है। कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर अनुत्कृष्ट पदविशेषकी वृद्धि व हानि नहीं पायी जाती है। इस प्रकार अनुत्कृष्ट पद दस (१०) पाये जाते हैं।

संपहि चउत्थपुच्छासुत्तस्स परूवणा वुच्चदे। तं जहा -- जहण्णणाणावरणीयवेयणा सिया अणुक्कस्सा, उक्कस्सादो हेट्ठिमवियप्पम्मि अणुक्कस्ससण्णिदम्मि जहण्णस्स वि संभवादो। सिया सादिया, अणुक्कस्सपदादो जहण्णपदस्स उप्पत्तिदंसणादो। अणादियभावो णत्थि, सव्वकालं जहण्णपदेणेव अवट्ठिदजीवाणुवलंभादो। सिया अद्धुवा, अजहण्णपदादो जहण्णपदुप्पत्तीदो। जहण्णस्स धुवभावो णत्थि, जहण्णपदे चेव सव्वकालमवट्ठिदजीवाणुवलंभादो। सिया जुम्मा, जहण्णाणुभागफद्दयवग्गणाविभागपडिच्छेदाणं कदजुम्मसंखाणमुवलंभादो। ओजपदं णत्थि। सिया णोम णोविसिट्ठा, वड्ढिदे हाइदे च जहण्णत्ताभावादो। एवं जहण्णपदं पंचवियप्पं ५।

अब चतुर्थ पृच्छासूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- जघन्य ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, उत्कृष्टसे नीचेके अनुत्कृष्ट संज्ञावाले

विकल्पमें जघन्य पदकी भी सम्भावना है। कथंचित् सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पदसे जघन्य पदकी उत्पत्ति देखी जाती है। अनादिता नहीं है, क्योंकि, सदा केवल जघन्य पदके साथ रहनेवाले जीव नहीं पाये जाते। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, अजघन्य पदसे जघन्य पद उत्पन्न होता है। जघन्य पदके ध्रुवता नहीं है, क्योंकि, जघन्य पदमें ही सदा जीवोंका अवस्थान नहीं पाया जाता। कथंचित् युग्म है, क्योंकि, जघन्य अनुभाग सम्बन्धी स्पर्धकों, वर्गणाओं और अविभागप्रतिच्छेदोंकी कृतयुग्म संख्याएँ पायी जाती हैं। ओजपद नहीं है। कथंचित् नोमनोविशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धि व हानिके होनेपर जघन्यपना नहीं रह सकता। इस प्रकार जघन्यपद पाँच (५) भेदस्वरूप है।

संपहि पंचमसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- णाणावरणीयस्स अजहण्णवेयणा सिया उक्कस्सा, सिया अणुक्कस्सा; एदेसिं दोण्हं पदाणं तत्थुवलंभादो। सिया सादिया, अजहण्णपदविसेसं पडुच्च सादियत्तदंसणादो। सिया अणादिया, अजहण्णपदसामण्णं पडुच्च आदीए अभावादो। सिया धुवा, अजहण्णपदसामण्णस्स तिसु वि कालेसु विणासाभावादो। सिया अद्धुवा, अजहण्णपदविसेसं पडुच्च विणासदंसणादो। सिया जुम्मा, अजहण्णाणुभागफद्दयवग्गणाविभागपडिच्छेदेसु कदजुम्मसंखाए चेव उवलंभादो। सिया ओमा, हाइदे वि अजहण्णत्तदंसणादो। सिया विसिट्ठा, वड्ढिदे वि तदुवलंभादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, वड्ढि-हाणीहि विणा अवट्ठिदअजहण्णाणुभागदंसणादो। एवमजहण्णपदं दसवियप्पं होदि १०।

अब पाँचवें सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणीयकी अजघन्य वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है और कथंचित् अनुत्कृष्ट है, क्योंकि, उसमें ये दोनों पद पाये जाते हैं। कथंचित् सादि है, क्योंकि, अजघन्य पदविशेषकी अपेक्षा सादिता देखी जाती है। कथंचित् अनादि है, क्योंकि, अजघन्य पदसामान्यकी अपेक्षा आदिका अभाव है। कथंचित् ध्रुव है, क्योंकि, अजघन्य पदसामान्यका तीनोंकी कालोंमें विनाश नहीं होता। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, अजघन्य पदविशेषकी अपेक्षा उसका विनाश देखा जाता है। कथंचित् युग्म है , क्योंकि, अजघन्य अनुभागके स्पर्धकों, वर्गणाओं और अविभागप्रतिच्छेदोंकी कृतयुग्म संख्या ही पायी जाती है। कथंचित् ओम है, क्योंकि, हानिके होनेपर भी अजघन्यता देखी जाती है। कथंचित् विशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धिके होनेपर भी अजघन्यता देखी जाती है। कथंचित् नोमनोविशिष्ट है,

क्योंकि, वृद्धि व हानिके विना अजघन्य अनुभागका अवस्थान देखा जाता है। इस प्रकार अजघन्य पद दस (१०) भेदस्वरूप है।

संपहि छट्ठमपुच्छासुत्तं (* अ प्रतौ 'छट्ठसुपुच्छासुत्त', ता प्रतौ 'छट्ठ(सु) पुच्छासुत्तं' इति पाठः।) पडुच्च अत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा -- णाणावरणीयस्स सादियवेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा। सिया अणादिया, णाणाजीवावेक्खाए सादित्तणेण वि आदिभावाणुवलंभादो। सिया धुवा, णाणाजीवे पडुच्च सव्वकालेसु सादित्तदंसणादो। सिया अद्धुवा, सादिभावमावण्णाणुभागस्स विणासदंसणादो। सिया जुम्मा, अणुभागम्मि फद्दय-वग्गणाविभागपडिच्छेदेसु तिसु वि कालेसु कदजुम्मभावस्सेव दंसणादो। सिया ओमा, हाइदे वि सादित्तदंसणादो। सिया विसिट्ठा, वड्ढिदे वि तदुवलंभादो। सिया णोमणोविसिट्ठा, वड्ढि-हाणीहि विणा वि तदवट्ठाणदंसणादो। एवं सादियपदमेक्कारसवियप्पं होदि ११।

अब छठे पृच्छासूत्रका आश्रय करके अर्थप्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- ज्ञानावरणीयकी सादि वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है व कथंचित् अजघन्य है। कथंचित् अनादि है, क्योंकि, नाना जीवोंकी अपेक्षा करके सब कालमें उसकी सादिता देखी जाती है। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, सादिताको प्राप्त अनुभागका विनाश देखा जाता है। कथंचित् युग्म है, क्योंकि, तीनों ही कालोंमें अनुभागके स्पर्धकों, वर्गणाओं और अविभागप्रतिच्छेदोंमें कृतयुग्मता ही देखी जाती है। कथंचित् ओम है, क्योंकि, हानिके होनेपर भी सादिता पायी जाती है। कथंचित् विशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धिके होनेपर भी सादिता पायी जाती है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धि व हानिके विना भी उसका अवस्थान देखा जाता है।

संपहि सत्तमपुच्छासुत्तं पडुच्च अत्थपरूवणा कीरदे। तं जहा -- अणादियणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा। सिया सादिया, णाणावरणीयअणुभागविसेसं पडुच्च सादित्तदंसणादो। सिया धुवा, अणुभागसामण्णस्स विणासाभावादो। सिया अद्धुवा, तव्विसेसं पडुच्च विणासदंसणादो। सिया जुम्मा सिया ओमा सिया विसिट्ठा सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवमणादियपदमेक्कारसवियप्पं होदि ११।

अब सातवें पृच्छासूत्रकी अपेक्षा करके अर्थकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है -- अनादि ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है व कथंचित् अजघन्य है। कथंचित् सादि है, क्योंकि, ज्ञानावरणीयके अनुभागविशेषका आश्रय करके सादिता देखी जाती है। कथंचित् ध्रुव है, क्योंकि, अनुभागसामान्यका कभी विनाश नहीं होता। कथंचित् अध्रुव है, क्योंकि, अनुभागविशेषकी अपेक्षा उसका विनाश देखा जाता है। कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है व कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार अनादि पद ग्यारह (११) भेदरूप है।

संपहि अट्ठमपुच्छासुत्तं पडुच्च अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- धुवणाणावरणीयभाववेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादिया सिया अद्धुवा सिया जुम्मा सिया ओमा सिया विसिट्ठा सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं धुवपदमेक्कारसविहं होदि ११।

अब आठवें पृच्छासूत्रका आश्रय करके अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- ध्रुव ज्ञानावरणीयभावेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है व कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार ध्रुव पद ग्यारह (११) प्रकारका है।

संपहि णवमपुच्छासुत्तं पडुच्च अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- अद्धुवणाणावरणीयवेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादिया, णाणाजीवेसु अणादिसरूवेण अद्धुवत्तदंसणादो। सिया धुवा विसेसाभावेण अद्धुवस्स अणुभागस्स सामण्णभावेण धुवत्तदंसणादो। सिया जुम्मा सिया ओमा विसिट्ठा सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवमद्धुवपदमेक्कारसवियप्पं होदि ११।

अब नौवें पृच्छासूत्रका आश्रय करके अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- अध्रुव ज्ञानावरणीय वेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है व कदाचित् सादि है। कथंचित् अनादि है, क्योंकि, नाना जीवोंमें अनादि स्वरूपसे अध्रुवता पायी जाती है। कथंचित् ध्रुव है, क्योंकि, विवक्षा न होनेसे अध्रुव अनुभागकी सामान्य

रूपसे ध्रुवता देखी जाती है। कथंचित् युग्म है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार अध्रुव पद ग्यारह (११) विकल्परूप है।

दसमपुच्छासुत्तं पडुच्च अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- जुम्मणाणावरणीयभाववेयणा सिया उक्कस्सा (सिया अणुक्कस्सा) सिया जहण्णा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादियासिया धुवा सिया अद्धुवा सिया ओमा सिया विसिट्ठा सिया णोम-णोविसिट्ठा। एवं जुम्मपदं एक्कारसवियप्पं होदि ११।

दसवें पृच्छासूत्रका आश्रय करके अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- युग्म ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, (कथंचित् अनुत्कृष्ट है), कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् ध्रुव है, कथंचित् अध्रुव है, कथंचित् ओम है, कथंचित् विशिष्ट है और कथंचित् नोम-नोविशिष्ट है। इस प्रकार युग्म पद ग्यारह (११) विकल्परूप है।

संपहि एक्कारसमपुच्छासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे, णत्थि अणुभागे ओजसंखाभावादो।

ग्यारहवें पृच्छासूत्रका अर्थ कहते हैं। नहीं है, क्योंकि, अनुभागमें ओजसंख्या सम्भव नहीं है।

संपहि बारसमसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- ओम णाणावरणीय भाववेयणा सिया अणुक्कस्सा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादिया सिया धुवा सिया अद्धुवा सिया जुम्मा। एवमोमपदं सत्तवियप्पं होदि ७।

बारहवें पृच्छासूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- ओम ज्ञानावरणीय भाववेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् ध्रुव है, कथंचित् अध्रुव है और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार ओम पद सात (७) विकल्परूप है।

संपहि तेरसमपुच्छासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- विसिट्ठणाणावरणीयभाववेयणा सिया अणुक्कस्सा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादिया सिया धुवा सिया अद्धुवा सिया जुम्मा। एवं विसिट्ठपदं सत्तवियप्पं होदि ७।

अब तेरहवें पृच्छासूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- विशिष्ट ज्ञानावरणीय भाववेदना कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् ध्रुव है, कथंचित् अध्रुव है और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार विशिष्ट पद सात (७) विकल्परूप है।

संपहि चोद्दसमपुच्छासुत्तत्थं भणिस्सामो। तं जहा -- णोम-णोविसिट्ठा णाणावरणीयभाववेयणा सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा सिया सादिया सिया अणादिया सिया धुवा सिया अद्धुवा सिया जुम्मा। एवं णोमणोविसिट्ठपदं णववियप्पं होदि ९।

सव्वसुत्तभंगंगसंदिट्ठी १२ । ५ । १० । ५ । १० । ११ । ११ । ११ । ११ । ११ । (०) । ७ । ७ । ९ ।

अब चौदहवें पृच्छासूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- नोम-नोविशिष्ट ज्ञानावरणीय भाववेदना कथंचित् उत्कृष्ट है, कथंचित् अनुत्कृष्ट है, कथंचित् जघन्य है, कथंचित् अजघन्य है, कथंचित् सादि है, कथंचित् अनादि है, कथंचित् ध्रुव है, कथंचित् अध्रुव है और कथंचित् युग्म है। इस प्रकार नोम-नोविशिष्ट पद नौ (९) विकल्परूप है।

सब सूत्रोंके भंगोंके अंकोंकी सन्दृष्टि -- १२+ ५+ १०+ ५+ १०+ ११+ ११+ ११+ ११+ ११ (+०)+ ७+ ७+ ९ है।

बारस पण दस पण दस पंचेक्कारस य सत्त सत्त णव।
दुविहणयगहणलीणा पुच्छासुत्तंकसंदिट्ठी।।१।।

बारह, पाँच, दस, पाँच, दस, पाँच स्थानोंमें ग्यारह, सात, सात और नौ, इस प्रकार दोनों नयोंकी अपेक्षा यह पृच्छासूत्रके अंकोंकी संदृष्टि है।।१।।

विशेषार्थ -- वेदना भावविधानका यहाँ मुख्यतया तीन अधिकारोंके द्वारा कथन किया गया है। ये तीन अनुयोगद्वार ये हैं -- पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व। उत्कृष्ट आदि पदोंके

द्वारा वेदनाभाव विधानके विचारका नाम पदमीमांसा है। यहाँ सूत्रमें उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य और अजघन्य इन चार पदोंका ही निर्देश किया है, किन्तु वीरसेन स्वामीने इनसे सूचित होनेवाले नौ पद और गिनाये हैं। ये कुल तेरह पद हैं। उसमें भी इनमेंसे एक-एक पदके आश्रयसे शेष पदोंका विचार करनेपर कुल १६९ पद होते हैं। यहाँ ज्ञानावरणीय भाववेदनाका विचार प्रस्तुत है। इस अपेक्षासे कुल संयोगी पद कितने होते हैं इसका कोष्ठक आगे देते हैं --

	उत्कृ.	अनु.	जघ.	अज.	सादि.	अना.	ध्रुव	अधु.	ओज	युग्म.	ओम.	विशि.	नोम.
उत्कृ.		×	×	”	”	×	×	”	×	”	×	×	”
अनु.	×		”	”	”	”	”	”	×	”	”	”	”
जघ.	×	”		×	”	×	×	”	×	”	×	×	”
अज.	”	”	×			”	”	”	×	”	”	”	”
सादि.	”	”	”	”		”	”	”	×	”	”	”	”
अना.	”	”	”	”	”		”	”	×	”	”	”	”
ध्रुव	”	”	”	”	”	”		”	×	”	”	”	”
अधु.	”	”	”	”	”	”	”		×	”	”	”	”
ओज	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×	×
युग्म.	”	”	”	”	”	”	”	”	×		”	”	”
ओम.	×	”	×	”	”	”	”	”	×	”		×	×
विशि.	×	”	×	”	”	”	”	”	×	”	×		×
नोम.	”	”	”	”	”	”	”	”	×	”	×	×	

यहाँ ओजपद क्यों सम्भव नहीं है इस बातका विचार टीकामें किया ही है तथा शेष पद प्रत्येक और संयोंगी कैसे घटित होते हैं यह बात भी टीकामें विस्तारसे बतलायी है।

एवं सत्तण्णं कम्माणं।।५।।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके विषयमें पदप्ररूपणा करनी चाहिए ।।५।।

जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा सत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं। एवं पदमीमांसा त्ति अणुयोगद्दारं सगंतोक्खित्तओजाहियारं समत्तं।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीयके पदोंकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके पदोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए। इस प्रकार ओज अधिकारगर्भित पदमीमांसा नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

सामित्तं दुविहं जहण्णपदे उक्कस्सपदे।।६।।

स्वामित्व दो प्रकारका है -- जघन्यपदविषयक और उत्कृष्टपदविषयक।।६।।

एत्थ 'पद' सद्दो ट्ठाणट्ठे दट्ठव्वो। जहण्णपदे एगं सामित्तं बिदियं उक्कस्सपदे एवं सामित्तं दुविहं। अजहण्ण-अणुक्कस्सपदसामित्तेहि सह चउव्विहं किण्ण भण्णदे? ण, एत्थेव तेसिमंतब्भावादो। तं जहा -- उक्कस्सं दुविहं, ओघुक्कस्समादेस्सुक्कस्सं चेदि। तत्थ संगहिदासेसवियप्पमोघुक्कस्सं। अप्पिदवियप्पादो अहियमादेसुक्कस्सं। (अणुक्कस्सं) आदेसुक्कस्समिदि एयट्ठो। तेण 'उक्कस्सं' इदि उत्ते एदेसिं दोण्णमुक्कस्साणं गहणं। जहण्णं पि दुविहं, ओघजहण्णमादेसजहण्णमिदि। जत्तो हेट्ठा अण्णो वियप्पो णत्थि तमोघजहण्णं। अप्पिदादो एगवियप्पादिणा परिहीणमादेसजहण्णं। तत्थ 'जहण्णपदं' इदि वुत्ते एदेसिं दोण्णं पि जहण्णाणं गहणं कायव्वं। तेण सामित्तं दुविहं चेव ण चउव्विहं। जत्थ जत्थ दुविहं सामित्तमिदि भणिदं भणिहिदि तत्थ तत्थ एवं चेव दुविहभावसमत्थणा कायव्वा।

यहाँपर 'पद' शब्दका अर्थ स्थान समझना चाहिए। एक स्वामित्व जघन्य पदमें होता है और दूसरा स्वामित्व उत्कृष्ट पदमें होता है। इस तरह स्वामित्व दो प्रकारका होता है।

शंका -- अजघन्य और अनुत्कृष्ट पदविषयक स्वामित्वके साथ स्वामित्व चार प्रकारका क्यों नहीं कहा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, इन्हीं दोनोंमें उनका अन्तर्भाव हो जाता है। यथा -- उत्कृष्ट स्वामित्व दो प्रकारका है -- ओघ उत्कृष्ट और आदेश उत्कृष्ट। उनमेंसे समस्त विकल्पोंका संग्रह करनेवाला ओघ उत्कृष्ट स्वामित्व है और विवक्षित विकल्पसे अधिक आदेश उत्कृष्ट स्वामित्व है। अनुत्कृष्ट और आदेश उत्कृष्ट इन दोनोंका एक अर्थ है, इसी कारण 'उत्कृष्ट' ऐसा कहनेपर इन दोनों उत्कृष्टोंका ग्रहण हो जाता है। जघन्य भी दो प्रकारका है -- ओघजघन्य

और आदेशजघन्य। जिसके नीचे और कोई दूसरा विकल्प नहीं रहता वह ओघ जघन्य स्वामित्व है तथा विवक्षित विकल्पसे एक विकल्प आदिसे हीन आदेश जघन्य स्वामित्व है। उनमेंसे 'जघन्यपद' ऐसा कहनेपर इन दोनों ही जघन्योंका ग्रहण करना चाहिए। इसलिए स्वामित्व दो प्रकारका ही है, चार प्रकारका नहीं। इसलिए जहाँ-जहाँ स्वामित्व दो प्रकारका कहा गया है या कहा जावेगा वहाँ-वहाँ इसी प्रकार दो भेदोंका समर्थन करना चाहिए।

सामित्तेण उक्कस्सपदे णाणावरणीयवेयणा भावदो उक्कस्सिया कस्स? ।।७।।

स्वामित्वकी अपेक्षा उत्कृष्ट पदमें भावसे ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट वेदना किसके होती है? ।।७।।

'सामित्तेण' इति कधमेत्थ तइया? ण एस दोसो; लक्खणे वि तइयाविहत्तिविहाणादो। 'उक्कस्सपद' णिद्देसेण जहण्णपदपडिसेहो कदो। सेसकम्मपडिसेहट्ठं 'णाणावरणीय' णिद्देसो कदो। दव्वादिपडिसेहफलो 'भाव' णिद्देसा। 'कस्स' इति वुत्ते किं णेरइयस्स तिरिक्खस्स मणुस्सस्स देवस्स एइंदियस्स बेइंदियस्स तीइंदियस्स चउरिंदियस्स वा त्ति पुच्छा कदा होदि आसंका वा।

शंका -- 'सामित्तेण' इस प्रकार यहाँ तृतीया विभक्ति कैसे संभव है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, लक्षणमें भी तृतीया विभक्तिका विधान किया जाता है।

सूत्रमें उत्कृष्ट पदके निर्देश द्वारा जघन्य पदका निर्देश किया है। शेष कर्मोंका निर्देश करनेके लिए ज्ञानावरणीय पदका निर्देश किया है। भावपदके निर्देशका फल द्रव्यादिका प्रतिषेध करना है। 'किसके होती है' ऐसा कहनेपर 'क्या नारकीके, तिर्यंचके, मनुष्यके,देवके, एकेन्द्रियके, द्वीन्द्रियके, त्रीन्द्रियके अथवा चतुरिन्द्रियके होती है' ऐसी पृच्छा अथवा आशंका प्रकट की गयी है।

अण्णदरेण पंचिंदिएण सण्णिमिच्छाइट्ठिणा सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदेण सागारुवजोगेण जागारेण णियमा (* अ प्रतौ 'सागार आगार णियमा' इति पाठः।) उक्कस्ससंकिलिट्ठेण बंधल्लयं जस्स तं संतकम्ममत्थि।।८।।

अन्यतर पंचेन्द्रिय, संज्ञी, मिथ्यादृष्टि, सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त अवस्थाको प्राप्त, साकार उपयोगयुक्त, जागृत और नियमसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त जिस जीवके द्वारा बन्ध होता है और जिस जीवके इसका सत्त्व होता है।।८।।

एदं सुत्तमुक्कस्साणुभागं बंधयंतस्स लक्खणं परूवेदि। विगलिंदिया उक्कस्साणुभागं ण बंधंति पंचिंदिया चेव बंधंति त्ति जाणावणट्ठं 'पंचिंदिएण' त्ति भणिदं वेदोगाहणगदिविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं (* अ प्रतौ 'विसेसाभव' इति पाठः।) 'अण्णदरेण' त्ति भणिदं। असण्णिपडिसेहट्ठं 'सण्णि'णिद्देसो कदो। सासणादिपडिसेहफलं 'मिच्छाइट्ठि' णिद्देसो। अपज्जत्तद्धाए उक्कस्साणुभागबंधो णत्थि, पज्जत्तद्धाए चेव बज्झदि त्ति जाणावणट्ठं 'सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदेण' इति भणिदं। दंसणोवजोगकाले उक्कस्साणुभागबंधो णत्थि णाणोवजोगकाले चेव होदि त्ति जाणावणट्ठं 'सागार'णिद्देसो कदो। सुत्तावत्थाए उक्कस्साणुभागबंधो णत्थि जाग्गंतस्सेव अत्थि त्ति जाणावणट्ठं 'जागार'णिद्देसो कदो। मंद-मंदतर-मंदतम-तिव्व-तिव्वतर-तिव्वतमभेदेण छसु संकिलेसट्ठाणेसु छट्ठसंकिलेसट्ठाणे सो उक्कस्साणुभागो बज्झदि त्ति जाणावणट्ठं 'उक्कस्ससंकिलिट्ठेण' इति भणिदं। ण च सो एयवियप्पो, आदेसुक्कस्सओघुक्कस्साणं दोण्णं पि गहणादो। 'णियमा' सद्दो जेण मज्झदीवओ तेण णियमा पंचिंदियेण णियमा सण्णिमिच्छाइट्ठिणा णियमा सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तयदेण णियमा सागारुवजोगेण णियमा जागारेण णियमा उक्कस्ससंकिलिट्ठेणेति वत्तव्वं। एवंविहेण जीवेण बद्धल्लयमुक्कस्साणुभागं जस्स तं संतकम्ममत्थि तस्से त्ति वुत्तं होदि।

यह सूत्र उत्कृष्ट अनुभागको बाँधनेवाले जीवका लक्षण बतलाता है। विकलेन्द्रिय उत्कृष्ट अनुभागको नहीं बाँधते हैं, किन्तु पंचेन्द्रिय ही बाँधते हैं; इस बातके ज्ञापनार्थ सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश किया है। वेद, अवगाहना एवं गति आदिकी विशेषताका अभाव बतलानेके लिए 'अन्यतर' पद दिया है। असंज्ञीका प्रतिषेध करनेके लिए 'संज्ञी' पदका निर्देश किया है। सासादन आदिका प्रतिषेध करनेके लिए 'मिथ्यादृष्टि' पदका ग्रहण किया है। अपर्याप्त कालमें उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध नहीं होता, किन्तु पर्याप्त कालमें ही उसका बन्ध होता है; इस बातके ज्ञापनार्थ 'सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त अवस्थाको प्राप्त' ऐसा कहा है। दर्शनोपयोगके कालमें उत्कृष्ट

अनुभागका बन्ध नहीं होता, किन्तु ज्ञानोपयोगके कालमें ही होता है; यह बतलानेके लिए 'साकार' पदका निर्देश किया है। सुप्त अवस्थामें उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध बन्ध नहीं होता, किन्तु जागृत अवस्थामें ही होता है; यह बतलानेके लिए 'जागार' पदका निर्देश किया है। मन्द, मन्दतर, मन्दतम, तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतमके भेदसे छह संक्लेशस्थानोंमेंसे छठे संक्लेशस्थानमें वह उत्कृष्ट अनुभाग बँधता है; यह बतलानेके लिए 'उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त' ऐसा कहा गया है। वह एक प्रकारका नहीं है, क्योंकि, यहाँ आदेश उत्कृष्ट और ओघ उत्कृष्ट इन दोनोंका ही ग्रहण है। सूत्रमें आया हुआ 'णियमा' पद चूँकि मध्यदीपक है अतः 'नियमसे पंचेन्द्रिय, नियमसे संज्ञी एवं मिथ्यादृष्टि, नियमसे जागृत तथा नियमसे उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त' ऐसा कहना चाहिए। उपर्युक्त विशेषणोंसे संयुक्त जीवके द्वारा बाँधे गये उत्कृष्ट अनुभागका सत्त्व जिस जीवके होता है उसके ज्ञानावरणीय वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है यह उक्त कथनका अभिप्राय है।

तं संतकम्ममेदस्स होदि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तमागदं --

वह सत्त्व इसके होता है, यह बतलानेके लिए आगेका सूत्र आया है --

तं एइंदियस्स वा बीइंदियस्स वा तीइंदियस्स वा चउरिंदियस्स वा पंचिंदियस्स वा सण्णिस्स वा असण्णिस्स वा बादरस्स वा सुहुमस्स वा पज्जत्तस्स वा अपज्जत्तस्स वा अण्णदरस्स जीवस्स अण्णदवियाए गदीए वट्टमाणस्स तस्स णाणावरणीयवेयणा भावदो उक्कस्सा।।९।।

उसका सत्त्व एकेन्द्रिय, अथवा द्वीन्द्रिय, अथवा त्रीन्द्रिय, अथवा चतुरिन्द्रिय, अथवा पंचेन्द्रिय, अथवा संज्ञी, अथवा असंज्ञी, अथवा बादर, अथवा सूक्ष्म, अथवा पर्याप्त, अथवा अपर्याप्त अन्यतर जीवके अन्यतम गतिमें विद्यमान होनेपर होता है; अतएव उक्त जीवके ज्ञानावरणीयकी वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।।९।।

तं संतकम्मं होदूण एइंदियादिएसु अपज्जत्तवसाणेसु लब्भदि। कधमण्णत्थ बद्धस्स उक्कस्साणुभागस्स अण्णत्थ संभवो? ण एस दोसो; उक्कस्साणुभागं बंधिदूण तस्स कंडयघादमकाऊण अंतोमुहुत्तेण कालेण एइंदियादिसु उप्पण्णाणं जीवाणं उक्कस्साणुभागसंतोवलंभादो। एवमेदेसु अवत्थाविसेसेसु वट्टमाणस्स णाणावरणीयवेयणा भावदो

उक्कस्सा होदि त्ति घेत्तव्वं। तत्थ उवसंहारो किमिदि ण वुच्चदे? ण एस दोसो, ठाणफद्दय-वग्गणाविभागपडिच्छेदेसु अणिवुणस्स अंतेवासिस्स उवसंघारे (* अ प्रतौ 'उवसंघादे' इति पाठः।) त्ति कट्टु तप्परूवणाए अकरणादो।

वह सत्कर्म सूत्रमें कही गयी एकेन्द्रियसे लेकर अपर्याप्त अवस्थातक सब अवस्थाविशेषोंमें पाया जाता है।

शंका -- अन्यत्र बाँधे गये उत्कृष्ट अनुभागकी दूसरी जगह सम्भावना कैसे हो सकती है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट अनुभागको बाँधकर उसका काण्डकघात किये बिना अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर एकेन्द्रियादिकोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके उत्कृष्ट अनुभागका सत्त्व पाया जाता है। इस प्रकार इन अवस्थाविशेषोंमें वर्तमान जीवके ज्ञानावरणीय वेदना भावसे उत्कृष्ट होती है, ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

शंका -- यहाँ उपसंहारका कथन क्यों नहीं करते?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जो शिष्य स्थान, स्पर्धक, वर्गणा और अविभागप्रतिच्छेदके विषयमें निपुण नहीं है उसे उपसंहारक कथन करनेपर व्यामोह न हो; इस कारण यहाँ उपसंहारक कथन नहीं किया है।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा।।१०।।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट भाववेदना होती है।।१०।।

तत्तो उक्कस्साणुभागादो (* अ प्रतौ 'भागोदो' इति पाठः।) वदिरित्तं तव्वदिरित्तं, सा अणुक्कस्सा भाववेयणा। एत्थ अणुक्कस्सट्ठाणाणं पुध पुध परूवणा किण्ण कीरदे? ण, उवरिमअणुभागचूलियाए अणुभागट्ठाणपरूवणं भणिहिदि एत्थ वि तप्परूवणे कीरमाणे पुणरुत्तदोसो होदि त्ति तदकरणादो।

उससे अर्थात् उत्कृष्ट अनुभागसे भिन्न जो वेदना है वह तद्व्यतिरिक्त कहलाती है और वह अनुत्कृष्ट भाववेदना है।

शंका -- यहाँ अनुत्कृष्ट स्थानोंकी पृथक् प्ररूपणा क्यों नहीं करते?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, आगे अनुभागचूलिकामें अनुभागस्थानोंका कथन करेंगे ही, फिर भी यहाँ उनका कथन करनेपर पुनरुक्त दोष होता है, अतः उनका कथन नहीं किया है।

एवं दंसणावरणीय-मोहणीय-अंतराइयाणं।।११।।

इसी प्रकार दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतरायके विषय में प्ररूपणा करनी चाहिए।।११।।

जहा णाणावरणीयअणुभागस्स उक्कस्साणुक्कस्सपरूवणा कदा तहा सेसाणं तिण्णं घादिकम्माणमुक्कस्साणुक्कस्सअणुभागपरूवणा कायव्वा, विसेसाभावादो।

जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्मके उत्कृष्ट और अनुत्कृष्ट अनुभागके स्वामीकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार शेष तीन घातिया कर्मोंकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, इससे उसमें कोई विशेषता नहीं है।

सामित्तेण उक्कस्सपदे वेयणीयवेयणा (* प्रतिषु 'भावादो' इति पाठः।)भावदो उक्कस्सिया कस्स? ।।१२।।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें वेदनीयवेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है? ।।१२।।

सुगममेदं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरेण खवगेण सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेण चरिमसमयबद्धल्लयं जस्स तं संतकम्ममत्थि।।१३।।

अन्यतर क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयत जिस जीवके द्वारा अन्तिम समयमें बन्ध होता है और जिस जीवके इसका सत्त्व होता है।।१३।।

वेदोगाहणादिविसेसाभावपदुप्पायणट्ठं 'अण्णदरेणे' त्ति भणिदं। अक्खवगपडिसेहट्ठं 'खवगेणे'त्ति णिद्दिट्ठं। 'सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेणे'त्ति णिद्देसो सेसखवगपडिसेहफलो। दुचरिमादिसमएसु बद्धाणुभागपडिसेहट्ठं 'चरिमसमयबद्दल्लयं' त्ति भणिदं। एदेण सुत्तेण चरिमसमय-सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदो उक्कस्साणुभागसामी होदि त्ति जाणाविदं।

वेद व अवगाहना आदिकी कोई विशेषता विवक्षित नहीं है यह बतलानेके लिये सूत्रमें 'अन्यतर' पद कहा है। अक्षपकका प्रतिषेध करनेके लिए 'क्षपक' पदका निर्देश किया है। 'सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत' के निर्देशका प्रयोजन शेष क्षपकोंका प्रतिषेध करना है। द्विचरम

आदिक समयोंमें बाँधे गये अनुभागका प्रतिषेध करनेके लिए 'चरिम समयमें बाँधा गया' ऐसा कहा है। इस सूत्रके द्वारा अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत उत्कृष्ट अनुभागका स्वामी होता है , यह प्रकट किया गया है। केवल यही जीव उत्कृष्ट अनुभागका स्वामी होता है, यह बात नहीं है, किन्तु जिस जीवके उसका सत्त्व रहता है वह भी उसका स्वामी होता है।

तं संतकम्मं कस्स होदि त्ति वुत्ते एदेसु होदि त्ति जाणावणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि --

उसका सत्त्व किसके होता है, ऐसा पूछनेपर, इन जीवोंके उसका सत्त्व होता है, यह बतलानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

तं खीणकसायवीदरागछदुमत्थस्स वा सजोगिकेवलिस्स वा तस्स वेयणीयवेयणा भावदो उक्कस्सा।।१४।।

उसका सत्त्व क्षीणकषायवीतराग छद्मस्थके होता है अथवा सयोगिकेवलीके होता है, अतएव उनके वेदनीयकी वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट होती है।।१४।।

सादावेदणीयउक्कस्साणुभागं बंधिय खीणकसाय-सजोगि-अजोगिगुणट्ठाणाणि उवगयस्स वेयणीयउक्कस्साणुभागो एदेसु गुणट्ठाणेसु लब्भदि। सुत्तम्हि अजोगिणिद्देसेण विणा कधमजोगिम्हि उक्कस्साणुभागो होदि त्ति लब्भदे? ण बिदिय 'वा' सद्देण तदुवलद्धी, 'पंचिंदियस्स वा' इच्चेवमाईसु ट्ठिद 'वा' सद्दो व्व वुत्तसमुच्चए तस्स पवुत्तीदो त्ति? होदु (* प्रतिषु 'होदि' इति पाठः।) तत्थतण 'वा' सद्दाणं समुच्चए पवुत्ती, तत्थ अण्णत्थाभावादो। एत्थतणो पुणो बिदिय 'वा' सद्दो अवुत्तसमुच्चए वट्टदे, पढम 'वा' सद्देणेव वुत्तसमुच्चयत्थसिद्धीदो। तदो बिदिय 'वा' सद्दो अजोगिग्गहणणिमित्तो त्ति घेत्तव्वो। अधवा, होदु णाम बिदिय 'वा' सद्दो वि वुत्तसमुच्चयट्ठ। अजोगिस्स कधं पुण गहणं होदि? अत्थावत्तीदो। तं जहा -- खीणकसायसजोगि गहणं पयडीणं विसोहीदो केवलिसमुग्घादेण जोगणिरोहेण वा अणुभागघादो णत्थि त्ति जाणावेदि। खीणकसाय-सजोगीसु-ट्ठिदि-अणुभागघादेसु संतेसु (* प्रतिषु 'संतेसु विहाणं' इति पाठः।) वि सुहाणं पयडीणं अणुभागघादो णत्थि त्ति सिद्धे अजोगिम्हि ट्ठिदिघाद-अणुभागघादवज्जिदे सुहाणं पयडीणमुक्कस्साणुभागो होदि त्ति अत्थावत्तिसिद्धं। सुहुमखवगउक्कस्साणुभाग-ट्ठिदिबंधो बारसमुहुत्तमेत्तो, सो कधं सजोगि अजोगीसु लब्भदे? ण च बारसमुहुत्तब्भंतरे तदुभवगुणट्ठाणमुवगदाणमुवलब्भदे परदो णोवलब्भदि त्ति वोत्तुं जुत्तं, वेयणीयखेत्तवेयणाए

उक्कस्सियाए संतीए तस्सेव भावो णियमेण उक्कस्सो त्ति एदेण सुत्तेण सह विरोहादो? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदीसु ट्ठिदपदेसाणं बंधाणुभागसरूवेण परिणदाणं थोवाणमुवलंभादो। कुदो णव्वदे? 'बंधे उक्कड्डदि' त्ति वयणादो।

साता वेदनीयके उत्कृष्ट अनुभागको बाँधकर क्षीणकषाय, सजोगी और अयोगी गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके गुणस्थानोंमें वेदनीयका उत्कृष्ट अनुभाग पाया जाता है।

शंका -- सूत्रमें अयोगी पदका निर्देश किये बिना अयोगिकेवली गुणस्थानमें उत्कृष्ट अनुभाग होता है, यह कैसे जाना जाता है? द्वितीय 'वा' शब्दसे उसका परिज्ञान होता है, यह भी यहाँ नहीं कहा जा सकता है, कारण कि 'पंचिंदियस्स वा' इत्यादिकोंमें स्थित 'वा' शब्दके समान द्वितीय 'वा' शब्द उक्त अर्थके समुच्चयमें प्रवृत्त है?

समाधान -- 'पंचिंदियस्स वा' इत्यादिकोंमें स्थित 'वा' शब्दोंकी प्रवृत्ति उक्त अर्थके समुच्चयमें भले ही हो, क्योंकि, वहाँ उनका दूसरा अर्थ नहीं है। किन्तु यहाँ स्थित द्वितीय 'वा' शब्द अनुक्त अर्थके समुच्चयमें प्रवृत्त है, क्योंकि, उक्त समुच्चयरूप अर्थकी सिद्धि प्रथम 'वा' शब्दसे ही हो जाती है। अतएव द्वितीय 'वा' शब्दको अयोगिकेवलीका ग्रहण करनेके निमित्त समझ ाना चाहिए।

अथवा द्वितीय 'वा' शब्द भी उक्त अर्थका समुच्चय करनेके लिए है। तो फिर अयोगिकेवलीका ग्रहण कैसे होता है ऐसा पूछनेपर कहते हैं कि उसका ग्रहण अर्थापत्तिसे होता है। यथा -- सूत्रमें क्षीणकषाय और सयोगिकेवलीका ग्रहण यह प्रकट करता हैकि शुभ प्रकृतियोंके अनुभागका घात विशुद्धि, केवलिसमुद्घात अथवा योगनिरोधसे नहीं होता। क्षीणकषाय और सयोगी गुणस्थानोंमें स्थितिघात व अनुभागघातके होनेपर भी शुभ प्रकृतियोंके अनुभागका घात वहाँ नहीं होता, यह सिद्ध होनेपर स्थिति व अनुभागघातसे रहित अयोगी गुणस्थानमें शुभ प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अनुभाग होता है, यह अर्थापत्तिसे सिद्ध है।

शंका -- सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके उत्कृष्ट अनुभाग व स्थितिका बन्ध बारह मुहूर्तप्रमाण होता है, वह सयोगी और अयोगीके भला कैसे पाया जा सकता है? यदि कहा जाय कि बारह मुहूर्तोंके भीतर ही उन दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त हुए वह पाया जाता है, आगे नहीं पाया जाता; सो यह कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, 'वेदनीयक्षेत्रवेदनाके उत्कृष्ट होनेपर उसीके उसका भाव भी नियमसे उत्कृष्ट होता है' इस सूत्रके साथ विरोध होगा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, बाँधे गये अनुभागस्वरूपसे परिणत पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र स्थितियोंमें स्थित प्रदेश थोड़े पाये जाते हैं।

शंका -- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- वह 'बंधे उक्कड्डदि' इस वचनसे जाना जाता है।

तव्वदिरित्तमणुक्कस्सा।।१५।।

उससे भिन्न अनुत्कृष्ट वेदना है।।१५।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

एवं णामा-गोदाणं।।१६।।

इसी प्रकार नाम व गोत्र कर्मके विषयमें भी कहना चाहिए।।१६।।

जसकित्ति-उच्चागोदाणं सुहुमसांपराइयखवगचरिमसमए उक्कस्सबंधुवलंभादो। जहा घादिकम्माणं मिच्छाइट्ठिम्हि उक्कट्ठसंकिलिट्ठम्मि उक्कस्साणुभागसामित्तं दिण्णं तहा एदासिं किण्ण दिज्जदे? ण, तत्थतणउक्कस्ससंकिलिस्सेण सुहपयडीणं बंधाभावादो तत्थतणअसुहपयडि-अणुभागसंतकम्मादो वि चरिमसमयसुहुमसांपराइयेण बद्धसुहपयडीणमुक्कस्साणुभागस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो।

कारण कि यशःकीर्ति और उच्चगोत्रका सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट बन्ध उपलब्ध होता है।

शंका -- जिस प्रकार उत्कृष्ट संक्लेशको प्राप्त मिथ्यादृष्टि जीवके घातिया कर्मोंके उत्कृष्ट अनुभागका स्वामित्व दिया गया है उसी प्रकार इनका क्यों नहीं दिया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, एक तो मिथ्यादृष्टिके उत्कृष्ट संक्लेशके द्वारा शुभ प्रकृतियोंका बन्ध नहीं होता है। दूसरे वहाँके अशुभ प्रकृतियोंके अनुभागसत्त्वकी अपेक्षा भी अन्तिम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके द्वारा बाँधा गया शुभ प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अनुभाग अनन्तगुणा पाया जाता है, इसलिए उस उत्कृष्ट अनुभागका स्वामित्व मिथ्यात्व गुणस्थानमें नहीं दिया गया है।

सामित्तेण उक्कस्सपदे आउववेयणा भावदो उक्कस्सिया कस्स?।।१७।।

स्वामित्वसे उत्कृष्ट पदमें आयु कर्मकी वेदना भावकी अपेक्षा उत्कृष्ट किसके होती है? ।।१७।।

सुगमं।

यह सूत्र सुगम है।

अण्णदरेण अप्पमत्तसंजदेण सागारजागारतप्पाओग्गविसुद्धेण बद्धल्लयं जस्स तं संतकम्ममत्थि।।१८।।

साकार उपयोग युक्त, जागृत और उसके योग्य विशुद्धियुक्त अन्यतर जिस अप्रमत्तसंयतके द्वारा आयुकर्मका बन्ध होता है और जिसके इसका सत्त्व होता है।।१८।।

ओगाहणादीहि भेदाभावपदुप्पायणट्ठं 'अण्णदरेणे'त्ति भणिदं। अप्पमत्तम्मि चेव उक्कस्साणुभागबंधो पमत्तम्मि ण होदि त्ति जाणावणट्ठं 'अप्पमत्तसंजदेणे'त्ति भणिदं। दंसणोवजोगसुत्तावत्थासु उक्कस्साणुभागबंधो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं 'सागार-जागार'णिद्देसो कदो। अइविसोहीए अइसंकिलिसेण च आउअस्स बंधो णत्थि त्ति जाणावणट्ठं 'तप्पाओग्गविसुद्धेण' इति भणिदं। जेण बद्धो (* अ प्रतौ 'बंधो' इति पाठः।) आउअस्स उक्कस्साणुभागो सो उक्कस्साणुभागस्स सामी होदि त्ति जाणावणट्ठं 'बद्धल्लयं' इदि भणिदं। बिदियादिसमएसु बंधविरहिदेसु उक्कस्साणुभागो किं होदि ण होदि त्ति पुच्छिदे जस्स तं संतकम्ममत्थि सो वि उक्कस्साणुभागसामी होदि त्ति भणिदं।

अवगाहना आदिसे होनेवाली विशेषताका अभाव बतलानेके लिए सूत्रमें 'अन्यतर' पद कहा है। अप्रमत्त गुणस्थानमें ही उत्कृष्ट अनुभागबन्ध होता है, प्रमत्त गुणस्थानमें वह नहीं होता, यह जतलानेके लिए 'अप्रमत्तसंयतके द्वारा' ऐसा कहा है। दर्शनोपयोग व सुप्त अवस्थाओंमें उत्कृष्ट अनुभागका बन्ध नहीं होता, यह बतलानेके लिए 'साकार उपयोगसहित व जागृत' ऐसा निर्देश किया है। अत्यन्त विशुद्धि एवं अत्यन्त संक्लेशसे आयुका बन्ध नहीं होता यह जतलानेके लिए 'उसके योग्य विशुद्धिसे संयुक्त' कहा है। जिसने आयुके उत्कृष्ट अनुभागको बाँधा है वह उत्कृष्ट अनुभागका स्वामी होता है, यह बतलानेके लिए 'बद्धल्लयं' ऐसा सूत्रमें निर्देश किया है।

बन्धसे रहित द्वितीयादिक समयोंमें क्या उत्कृष्ट अनुभाग होता है या नहीं होता ऐसा पूछनेपर जिसके उसका सत्त्व है वह भी उत्कृष्ट अनुभागका स्वामी होता है यह कहा है।

तं संतकम्मं कस्स अत्थि त्ति पुच्छिदे इमस्सत्थि त्ति जाणावणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

उसका सत्त्व किसके होता है, ऐसा पूछनेपर अमुक जीवके उसका सत्त्व होता है, यह बतलानेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --